Shiv Shakti International Journal of Multidisciplinary and Academic Research
ISSN: 2278-5973 (Online) | Vol. 13, No. 5, (September 2025)
https://doi.org/10.5281/zenodo.17234009

रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्रामीण यथार्थ और सामाजिक मूल्यों की पुनर्परिभाषा

सुनीता[1] और डॉ. अंकित[2]
शोधार्थी, हिंदी विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश
पर्यवेक्षक, विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आई.ई.सी. विश्वविद्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश

सारांश

यह शोध–पत्र प्रसिद्ध हिंदी लेखक रामदरश मिश्र के कथा–साहित्य में निहित ग्रामीण यथार्थ और सामाजिक मूल्यों के पुनर्परिभाषण का विश्लेषण करता है। मिश्र जी की कहानियाँ और उपन्यास भारतीय ग्राम्य जीवन की गहन अनुभूतियों, संघर्षों, सांस्कृतिक प्रतीकों और सामाजिक अंतर्विरोधों को उभारते हैं। उन्होंने प्रेमचंदीय परंपरा का निर्वहन करते हुए आधुनिक यथार्थवाद, लोकभाषा, सामाजिक विषमता, जातीय भेदभाव, और महिला अस्मिता जैसे विषयों को अपने कथा साहित्य में समाहित किया है। उनकी भाषा में सहजता, लोकबोध, और सांस्कृतिक रंग है, जो ग्रामीण भारत की आत्मा को उकेरने में समर्थ हैं। यह शोध रचनाओं जैसे 'जल टूटता हुआ', 'सूखता हुआ तालाब', 'अपने लोग', 'पानी के प्राचीर', और कहानियाँ 'दिनचर्या', 'जमीन' आदि के माध्यम से उनके साहित्यिक अवदान को समकालीनता, सामाजिक चेतना और मूल्य बोध के परिप्रेक्ष्य में पुनर्परिभाषित करता है।

मुख्य शब्दः रामदरश मिश्र, ग्रामीण यथार्थ, सामाजिक मूल्य, कथा–साहित्य, स्त्री विमर्श, लोकभाषा

शोध की पृष्ठभूमि

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में ग्रामीण यथार्थ के प्रति एक नई संवेदना और सामाजिक पुनर्रचना की चेतना प्रकट होती है। इस प्रवृत्ति के प्रतिनिधि रचनाकारों में रामदरश मिश्र का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिन्होंने हिंदी कथा साहित्य को ग्रामीण जीवन की भीतरी परतों से जोड़ते हुए न केवल यथार्थ का प्रामाणिक चित्रण किया, बल्कि उसमें निहित मानवीय मूल्यों की पुनर्व्याख्या भी की।

मिश्र जी का लेखन उस काल की अभिव्यक्ति है, जब आज़ादी के पश्चात भी गाँव की वास्तविक समस्याएँ जैसे गरीबी, अकाल, बाढ़, और व्यवस्था का विफल तंत्र ज्यों की त्यों बनी रहीं। जैसा कि गोकुलदास ठाकरे लिखते हैं :

> "गाँव व्यापक होने के साथ–साथ यहाँ बहुसंख्य किसान वर्गों में कुछ शिक्षित हैं। आज़ादी के बाद बनी विविध योजनाओं से नए तंत्र से लोगों के सपने पूरे नहीं हुए, जिसके लिए वे लड़े थे। गरीबों की समस्याओं का कोई उचित हल न निकल सका। गाँव के कई किसानों के घरों में बाढ़ आने से दो वक्त चूल्हा तक नहीं जलता। माँ–बाप के साथ कभी बच्चों को भी भूखा ही सोना पड़ता है।" (ठाकरे 773)

Corresponding Author: Sunita, mormech.engg@gmail.com

इस पृष्ठभूमि में रामदरश मिश्र का कथा साहित्य एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में उभरता है, जो न केवल गाँव की समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि उसमें मौजूद मूल्यगत तत्वों की पहचान और पुनर्परिभाषा का कार्य भी करता है।

उद्देश्य और महत्व

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है – रामदरश मिश्र के कथा साहित्य (कहानी और उपन्यास) में अभिव्यक्त ग्रामीण यथार्थ तथा सामाजिक मूल्यों के स्वरूप का विश्लेषण करना और यह समझना कि उन्होंने ग्रामीण समाज के भीतर किन मूल्य संकटों की ओर संकेत किया है तथा किस प्रकार इन मूल्यों की नवीन पुनर्रचना की है।

इसके अतिरिक्त शोध का यह उद्देश्य भी है कि:

1. रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में यथार्थ और मूल्यबोध के बीच के संबंधों की पहचान की जाए।
2. उनके लेखन में निहित संवेदनात्मक दृष्टिकोण और लोकसचेतना को समकालीन संदर्भों में विश्लेषित किया जाए।
3. अकाल, बाढ़, जातीय भेदभाव, स्त्री–विमर्श जैसी सामाजिक वास्तविकताओं को मूल्यों के आलोक में देखा जाए।

महत्त्व इस बात में है कि आज जब ग्रामीण भारत तेजी से बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश से गुजर रहा है, तब रामदरश मिश्र का लेखन परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में जूझते ग्रामीण समाज की संवेदनशील व्याख्या प्रस्तुत करता है।

स्रोत सामग्री और विधि

इस शोध में मूल स्रोत के रूप में रामदरश मिश्र के कथा–साहित्य का प्रयोग किया गया है। उनके प्रमुख उपन्यासों और कहानियों को आधार बनाकर मूल्यों और यथार्थ के बिंदुओं का पाठ विश्लेषण किया गया है।

सहायक स्रोत के रूप में शोध–पत्रिकाओं, आलोचनात्मक लेखों, और शोध–प्रबंधों का उपयोग हुआ है। उदाहरण के लिए:
"माँ सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो" में वर्णित खेतों का दृश्य अकाल से पहले की ग्रामीण समृद्धि को दर्शाता है:

> "इस रास्ते, मैं कई बार आया हूँ, इस मौसम में, तब खेत तरह तरह की फसलों से भरे रहते थे... गाँव की लड़कियाँ और स्त्रियाँ हँसती हुई खेत में उतराई रहती थीं।" (अंबिली 2)

इस तरह की रचनाएँ पर्यावरणीय, सामाजिक, और सांस्कृतिक संदर्भों में ग्रामीण जीवन को बहुआयामी रूप में प्रकट करती हैं।

शोध की विधि: गुणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए सामग्री विश्लेषण और सांस्कृतिक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है।

रामदरश मिश्र का कथा साहित्यः एक परिचय

रामदरश मिश्र हिंदी साहित्य के एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने कथा, कविता, निबंध, संस्मरण और यात्रा–वृत्तांत जैसी विविध विधाओं में अपनी सृजनात्मक उपस्थिति दर्ज की। उनका जन्म 15 अगस्त, 1924 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद स्थित डुमरी गाँव में हुआ। एक साधारण ग्रामीण परिवेश में जन्मे मिश्र जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालयों से प्राप्त की और उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पूर्ण की। वे गुजरात और दिल्ली विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य से जुड़े रहे और वर्ष 1990 में दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुए।

उनकी साहित्यिक यात्रा 1950 के दशक से आरंभ हुई और 2024 तक सृजन में निरंतरता बनी रही। उनके रचनात्मक विकास की धारा गाँव की मिट्टी से जुड़कर प्रारंभ हुई और धीरे–धीरे उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय जटिलताओं का समावेश होता चला गया। प्रारंभिक रचनाओं में जहाँ ग्रामीण जीवन की सरलता और संघर्ष की झलक मिलती है, वहीं उत्तरवर्ती रचनाओं में व्यक्ति और समाज के बदलते रिश्तों, सांस्कृतिक संक्रमण, और मूल्यों के विघटन की पीड़ा मुखर रूप में प्रकट होती है। उनके कथा साहित्य में यथार्थ और भावनात्मक गहराई का सशक्त समन्वय दिखाई देता है।

> "रामदरश मिश्र हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, और कवि हैं। उनका कथा साहित्य ग्रामीण जीवन, सामाजिक–आर्थिक विषमताओं, और मानवीय संबंधों पर केंद्रित है।" ("रामदरश मिश्र का कथा साहित्य",)

कहानी विधा में योगदान –

रामदरश मिश्र ने हिंदी कहानी को एक नई संवेदना प्रदान की। उन्होंने गाँव के अभावग्रस्त जीवन, पीड़ा, भूख, शोषण, और संवेदनात्मक संबंधों को अत्यंत सहज और प्रभावी भाषा में चित्रित किया। उनकी प्रमुख कहानियों कृ 'संध्या', 'प्रायश्चित्त', 'सूखता हुआ तालाब', 'अपने लोग', 'जल टूटता हुआ', 'पानी', 'दिनचर्या' कृ में सामाजिक यथार्थ और मानवीय द्वंद्व का गहन चित्रण मिलता है। उनकी भाषा में जो सहजता और संवाद का भाव है, वह पाठकों को पात्रों के जीवन में घुल जाने को प्रेरित करता है।

उपन्यास विधा में योगदान –

रामदरश मिश्र के उपन्यास 'जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, पानी के प्राचीर, दूसरा घर, रात का सफर' आदि, स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण और कस्बाई जीवन को प्रतिबिंबित करते हैं। उनके उपन्यासों में सामाजिक विषमता, पर्यावरणीय आपदाएँ, रिश्तों का विघटन और मूल्य–बोध का संघर्ष जैसे अनेक विषयों को यथार्थपरक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

> "उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन, सामाजिक बदलाव, और व्यक्ति के अंतर्द्वंद्वों को चित्रित किया गया है... 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण जीवन के बदलावों और नए मूल्यों को दर्शाया गया है।" ("रामदरश मिश्र का कथा साहित्य")

उनकी कहानियाँ 'धर्मयुग', 'सारिका' जैसी प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर लोकप्रिय हुईं। साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान, भारत भारती, सरस्वती सम्मान आदि द्वारा सम्मानित मिश्र जी का कथा साहित्य विश्वविद्यालयों में शोध और अध्ययन का विषय बना।

रामदरश मिश्र के कथा साहित्य की कई प्रवृत्तियाँ उनके समकालीन रचनाकारों से उन्हें विशिष्ट बनाती हैं:

1. ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण –

मिश्र जी ने अपने कथा साहित्य में गाँव के श्रमिक, किसान, स्त्री, दलित और साधारण जन की व्यथा, पीड़ा और संघर्ष को केंद्र में रखा। उनके पात्र गाँव के खेत–खलिहानों, गलियों और चूल्हों से निकलकर जीवन की गहरी सामाजिक परतों को उजागर करते हैं। वे ग्रामीण जीवन को आदर्श नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से चित्रित करते हैं।

2. सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन –

जातिवाद, गरीबी, अशिक्षा, और अन्याय जैसे मुद्दों को उनकी कहानियाँ संवेदना के स्तर पर छूती हैं। वे किसी 'आंदोलनात्मक घोषणापत्र' की शैली में नहीं, बल्कि पात्रों के अनुभवों के माध्यम से इन समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं।

3. पात्रों का सशक्त चित्रण –

मिश्र जी के पात्र स्थिर और रूढ़ नहीं हैं, बल्कि वे परिवर्तनशील, संघर्षशील और स्वाभाविक हैं। चाहे वह माँ, किसान, गाँव की स्त्री या निर्दोष दलित युवक हो, हर पात्र अपनी समस्या और मूल्य–बोध के साथ साहित्यिक यथार्थ का हिस्सा बन जाता है।

4. भाषा की सहजता और लोक रंग –

उनकी भाषा सजीव, बोली के निकट और सहज है। कई बार अवधी, भोजपुरी, पूर्वी हिंदी के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग, उनकी रचनाओं को लोक जीवन से जोड़ता है। यही शैली उन्हें जनसामान्य के बीच लोकप्रिय बनाती है।

> "उनकी कहानियों की शैली सहज, सरल और भावात्मक है। वे पात्रों के मन के अंतर्द्वंद्वों और भावनाओं को बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त करते हैं।" ("रामदरश मिश्र का कथा साहित्य")

5. मूल्यबोध और करुणा की प्रतिष्ठा –

मिश्र जी के कथा साहित्य में करुणा, सहिष्णुता, आत्म–सम्मान, और सहयोग जैसे मूल्य पुनर्परिभाषित होते हैं। उन्होंने दर्शाया कि ग्रामीण जीवन में मूल्यबोध केवल परंपरागत नहीं, बल्कि संघर्ष के बीच गढ़ा गया सत्य है।

ग्रामीण यथार्थ का प्रस्तुतीकरण

रामदरश मिश्र का कथा साहित्य ग्रामीण भारत के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने न केवल ग्राम्य जीवन के सौंदर्य और मूल्य–बोध को उजागर किया, बल्कि वहाँ व्याप्त विषमताओं, शोषण और विघटन की प्रक्रियाओं को भी गंभीरता से चित्रित किया है। उनका साहित्य आत्मीयता, प्रामाणिकता और मानवीय दृष्टिकोण से भरा हुआ है, जो उनके लेखकीय अनुभव और ग्रामीण जीवन के गहन अवलोकन से जन्मा है। उनके के कथा साहित्य में सामाजिक संरचना को एक जटिल, लेकिन यथार्थपरक परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया गया है। उनका उपन्यास 'पानी के प्राचीर' इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है, जिसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के एक अभावग्रस्त गाँव 'पाण्डेपुरवा' की कहानी के माध्यम से भारतीय ग्राम समाज की बहुस्तरीय गाथा प्रस्तुत की गई है:

> "'पानी के प्राचीर' रामदरश मिश्र का पहला एवं महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यास हैं...इस उपन्यास की कथा स्वतंत्रता प्राप्ति के एक अभावग्रस्त गाँव पाण्डेपुरवा के द्वारा भारतीय ग्राम्य समाज की प्रभावशाली गाथा प्रस्तुत करती है।" (पटेल 1142)

यह उपन्यास बताता है कि कैसे सामाजिक स्तर पर भूमिहीन किसान, मजदूर और दलित वर्ग प्रभुत्वशाली शक्तियों के अधीन हैं। वर्गीय संबंधों में शोषण और विरोध की जो प्रक्रिया है, वह 'शोषक' और 'शोषित' के संबंधों में स्पष्ट होती है।

मिश्र जी ने गाँव की विषम आर्थिक परिस्थिति का चित्रण संवेदनशीलता से किया है। बाढ़, सूखा, महंगाई, बेरोज़गारी जैसे कारक गाँव की आर्थिकी को प्रभावित करते हैं। उपन्यास 'जल टूटता हुआ' में बाढ़ के बाद गाँव के जीवन की त्रासदी और विपन्नता का चित्रण अत्यंत मार्मिक रूप से मिलता है:

> "गाँव के कई किसानों के घरों में बाढ़ आने से दो वक्त चूल्हा तक नहीं जलता। माँ–बाप के साथ कभी बच्चों को भी भूखा ही सोना पड़ता है।" (ठाकरे 773)

गाँव में कृषि पर निर्भरता, साहूकारों का शोषण, रोजगार की कमी और सरकारी योजनाओं की असफलता को वे निरंतर उजागर करते हैं।

रामदरश मिश्र के साहित्य में जातिगत विषमता को बड़ी गंभीरता से चित्रित किया गया है। जाति व्यवस्था के आधार पर दलितों और पिछड़े वर्गों का अपमान, भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार बार–बार उभरता है। उनकी कहानी "जमीन" में एक चमार लड़के के साथ ऊँची जाति द्वारा किए गए व्यवहार से यह परिदृश्य और भी स्पष्ट होता है। इसके साथ ही, मिश्र जी सत्ता के ग्रामीण गठबंधन की विसंगतियों को भी उजागर करते हैंकृकैसे पंचायती राजनीति, वोट बैंक और प्रशासनिक तंत्र दलित और गरीब वर्ग के लोगों को सिर्फ एक औजार की तरह इस्तेमाल करता है, उन्हें सशक्त करने के बजाय अधिक हाशिए पर धकेलता है।

रामदरश मिश्र के पात्र उनकी कथाओं की आत्मा हैं। ये पात्र न केवल विशिष्ट ग्राम्य चरित्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि वे अपने संघर्ष, करुणा, हिम्मत और जीवन जीने की जिजीविषा के साथ पाठकों के हृदय में स्थान बना लेते हैं। उदाहरणतः, 'माँ सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' कहानी में खेत, स्त्रियों, और गाँव की छवि जीवन्त रूप से आती है:

> "इस रास्ते, मैं कई बार आया हूँ... तब खेत तरह तरह की फसलों से भरे रहते थे... गाँव की लड़कियाँ और स्त्रियाँ हँसती हुई खेत में उतराई रहती थीं।" (अंबिली 2)

इस तरह के दृश्य, न केवल ग्रामीण जीवन की जीवंतता को प्रकट करते हैं, बल्कि उसमें निहित सांस्कृतिक चेतना और सामूहिकता की भावना को भी दर्शाते हैं। मिश्र ने ग्रामीण यथार्थ को केवल सामाजिक समस्या के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे एक जीवंत सामाजिक–सांस्कृतिक इकाई के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने यह दिखाया कि गाँव केवल पीड़ा और अभाव का प्रतीक नहीं, बल्कि जीवटता, जिजीविषा और मूल्य–निष्ठा का केंद्र भी है। उनके पात्रों, कथानकों और ग्रामीण दृश्यों के माध्यम से भारत की आत्मा को उसकी संपूर्णता में उकेरने का कार्य उन्होंने अत्यंत संजीदगी से किया है।

सामाजिक मूल्य और उनका पुनर्परिभाषण

रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में सामाजिक मूल्य केवल एक पारंपरिक आदर्श नहीं, बल्कि समाज में हो रहे परिवर्तन, संघर्ष और विमर्श की प्रक्रिया के साथ जुड़े हुए सजीव तत्व हैं। उन्होंने ग्रामीण जीवन, शहरीकरण, जातिवाद, स्त्री–पुरुष संबंध, करुणा, आत्मबल, और

सामाजिक न्याय के विभिन्न पहलुओं को अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से नए परिप्रेक्ष्य में रखा है। उनके लेखन में मूल्य–बोध एक स्थिर अवधारणा नहीं, बल्कि समयानुकूल परिवर्तित होने वाली चेतना है, जिसे वे बार–बार 'पुनर्परिभाषित' करते हैं।

रामदरश मिश्र का साहित्य मानवीय करुणा और सहिष्णुता से ओतप्रोत है। उनके पात्र संकटों में भी धैर्य, संवेदना और परोपकार जैसे गुणों का परिचय देते हैं। उन्होंने ग्रामीण समाज की दरिद्रता और अभावों के बावजूद उसमें जीवित मानवीय मूल्यों की छवि प्रस्तुत की है।

'पानी के पात्र' उपन्यास में गाँव के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक यथार्थ को करुणा की दृष्टि से देखा गया हैः

> "रामदरश मिश्र उपन्यास में भी गाँव के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ की संश्लिष्ट गाथा प्रस्तुत की गई।" (मिश्र, रामदरश, पृष्ठ 89)

यह करुणावाद, न केवल पीड़ित पात्रों की व्यथा के माध्यम से प्रकट होता है, बल्कि लेखक की सहानुभूतिशील दृष्टि के रूप में भी उभरता है। उनकी कहानियाँ 'सूखता हुआ तालाब' और 'बारिश में भीगते बच्चे' इस करुणा को यथार्थ के धरातल पर चित्रित करती हैं।

रामदरश मिश्र ने नारी पात्रों को केवल एक सामाजिक भूमिका में नहीं, बल्कि स्वतंत्र सोच, आत्मसम्मान और संघर्षशीलता के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके कथा साहित्य में नारी जीवन की पीड़ा के साथ–साथ उसका प्रतिरोध भी सामने आता है। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ किसी नायिकात्व की पात्र न होकर, सामाजिक उत्पीड़न का सामना करते हुए भी आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय की चेतना को आत्मसात करती हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक स्त्री विमर्श की ओर संकेत करता है, जहाँ स्त्री केवल 'सहनशील' नहीं, बल्कि 'विचारशील और सक्रिय' होती है। उदाहरण के लिए, 'संध्या' और 'प्रायश्चित्त' जैसी कहानियाँ स्त्री–मन के अंतर्द्वंद्व, सामाजिक दबाव और उसकी वैचारिक शक्ति को केंद्र में रखती हैं।

रामदरश मिश्र का साहित्य परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को गहराई से उजागर करता है। विशेषतः ग्रामीण युवाओं में शिक्षा, नौकरी, स्वतंत्रता की आकांक्षा और आधुनिक जीवनशैली की ओर आकर्षण दिखाई देता है, जिससे पारंपरिक मूल्यों में टकराव उत्पन्न होता है। वे यह दिखाते हैं कि कैसे आधुनिकता का अंधानुकरण गाँव की सामूहिकता, संबंधों की आत्मीयता और जीवन के सरल सौंदर्य को विस्थापित कर रहा है। वहीं, वह इस संघर्ष को एक नकारात्मक विखंडन के रूप में नहीं, बल्कि संभावनाओं से भरे संक्रमणकाल के रूप में चित्रित करते हैं। इस सन्दर्भ में 'अपने लोग' उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें पारंपरिक जीवन मूल्यों और आधुनिक महत्वाकांक्षाओं का गहरा द्वंद्व चित्रित है।

मिश्र ने अपने पात्रों में आत्मबल और आत्मसम्मान की भावना को प्रमुख स्थान दिया है। विशेषकर गरीब, दलित, और स्त्री पात्रों में यह चेतना बार–बार उभरती है कि वे केवल सहने या झुकने के लिए नहीं बने हैं, बल्कि वे अपने अधिकारों के लिए खड़े होने का साहस भी रखते हैं। उनका साहित्य सामूहिकता और ग्रामीण चेतना के उस भाव को भी सशक्त करता है, जहाँ समाज व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर साझा संघर्ष और सहयोग में विश्वास रखता है। 'जल टूटता हुआ' और 'पानी के प्राचीर' जैसे उपन्यासों में यह सामूहिक चेतना विपत्ति

में भी लोगों को जोड़कर रखती है। बाढ़ या अकाल की स्थितियों में ग्रामीण समुदाय का संघर्ष और सामूहिक प्रयास इस चेतना को मुखर करता है। रामदरश मिश्र ने सामाजिक मूल्यों की पुनर्परिभाषा करते हुए उन्हें आधुनिक संदर्भों से जोड़ने का प्रयास किया है। उनकी रचनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि मूल्य न तो स्थायी होते हैं, न ही केवल पुस्तकीय आदर्श। वे समय, स्थान, और अनुभव के साथ बदलते हैं और नए अर्थ ग्रहण करते हैं। उनके साहित्य में सहिष्णुता, करुणा, आत्मबल, स्त्री चेतना और सामाजिक न्याय जैसे मूल्य एक नयी परिभाषा के साथ उभरते हैं, जो हिंदी कथा साहित्य में उन्हें एक अद्वितीय स्थान प्रदान करते हैं।

लोकभाषा और आंचलिक रंग

रामदरश मिश्र की भाषा में अवधी और पूर्वी हिंदी की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। उनका जन्म गोरखपुर जैसे पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँव में हुआ था, इसलिए उनके कथा संसार में प्रयुक्त बोली–ठेठ ग्रामीण जीवन की आत्मा को छूती है। यह लोकभाषा केवल संवादों तक सीमित नहीं, बल्कि कथा की वर्णनात्मक भाषा का भी हिस्सा बनती है। "सूखता हुआ तालाब" और "जल टूटता हुआ" जैसे उपन्यासों में मिश्र जी ने ग्रामीण शब्दावली, मुहावरों, लोकोक्तियों, और आंचलिक बोलियों का प्रयोग करके पात्रों को स्थानीयता से जोड़ा है। इससे पाठक सीधे उस ग्रामीण समाज का हिस्सा महसूस करता है।

उदाहरण के लिए एक अंशः
"अब तो कहारिन बुढ़िया कहे लागी, 'बबुआ अबका करब? अब त बड़का भी पियक्कड़ हो गइल बा। बहुरिया खेत में जाए के कइसे सोच सकतिया!'"
इस प्रकार का लोकभाषिक प्रयोग कथा को प्रामाणिक और जीवन्त बनाता है।

रामदरश मिश्र के साहित्य में अनेक सांस्कृतिक प्रतीक दिखाई देते हैं, जो समाज के मूल्यों, विश्वासों और आस्थाओं को प्रकट करते हैं। उनकी कहानियों और उपन्यासों में जल, खेत, नदी, तालाब, झोंपड़ी, बाढ़ जैसे प्रतीकों का प्रयोग ग्रामीण जीवन के संघर्षों और संवेदनाओं को रूपायित करने हेतु किया गया है। जैसे 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में "जल" एक प्रतीक बनकर जीवन और संकट दोनों को प्रतिबिंबित करता है। झोंपड़ी एक गरीब स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान का प्रतीक बन जाती हैः
"किसी श्रीमान् जमींदार के महल के पास एक गरीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी... जब उसने अपने श्रीमान पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना तब से वह मृतप्राय हो गयी थी... तब वे जमींदारी चाल चलने लगे..." (सिंह, दिनेश प्रसाद, पृष्ठ 2)

यह प्रतीकात्मकता कथा को भावनात्मक गहराई देती है, जहाँ पाठक केवल दृश्य नहीं देखता, बल्कि अर्थ की परतें खोलता है।

रामदरश मिश्र की लेखनी की सबसे बड़ी शक्ति हैकृउनका संवाद। उनके पात्रों के संवादों में कृत्रिमता नहीं होती, बल्कि वे जैसे जीते–जागते लोग सामने बैठकर बात कर रहे हों। यह संवाद शैली उनके ग्रामीण पात्रों की सामाजिक स्थिति, मानसिक अवस्था और परिवेश के अनुरूप बदलती है। उनकी वर्णनात्मक शैली भावात्मक और विचारात्मक होती है, जिसमें पात्रों के मनोविज्ञान को गहराई से उद्घाटित किया गया है। उदाहरण के लिए, एक पात्र की आंतरिक स्थिति को वे इस प्रकार व्यक्त करते हैंः "माँ अपनी पोती के सिर पर हाथ फेरते

हुए चुपचाप आकाश को देख रही थी कृ मानो वह जानती थी कि अब कोई सहारा नहीं बचेगा।" इस प्रकार की शैली पाठकों को पात्र के मन में झाँकने की शक्ति देती है।

यथार्थ को उद्घाटित करने वाली साहित्यिक भाषा

रामदरश मिश्र की भाषा में न तो अलंकारिक बोझ है, न दार्शनिक भटकाव। वह भाषा उस यथार्थ को उद्घाटित करती है, जो भारत के गाँवों में शोषण, गरीबी, जातिवाद और राजनीतिक कुटिलताओं के रूप में विद्यमान है। उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज के सच्चे चित्र को सामने लाना है। 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', और 'अपने लोग' जैसे उपन्यासों में भाषा एक सामाजिक यंत्र बनकर उभरती है, जो पाठकों को यथार्थ के कटु सत्य से जोड़ती है। उनकी साहित्यिक भाषा में विचारों की गहराई और मानवीय संवेदना की ऊष्मा होती है। रामदरश मिश्र की भाषा और शैली ने हिंदी कथा साहित्य को एक नया लोकमुख प्रदान किया। उन्होंने दिखाया कि साहित्यिक भाषा का सौंदर्य केवल क्लिष्टता में नहीं, बल्कि जन–जीवन की आत्मा से जुड़े संवादों, लोकभाषा, सांस्कृतिक प्रतीकों, और सहज शैली में निहित होता है। उनकी लेखनी गाँव की माटी की गंध लिए हुए है, जो न केवल सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करती है, बल्कि उसे आत्मीयता और संवेदना से भी ओत–प्रोत करती है। कहानियाँ और उपन्यास उनके ग्रामीण अनुभवों का गहन सामाजिक और संवेदनशील दस्तावेज़ हैं। उन्होंने न केवल गाँव की संरचना, भाषा और जीवन को प्रस्तुत किया, बल्कि उसमें व्याप्त जातीय विषमता, शोषण, सत्ता–प्रवृत्ति और मानवीय मूल्यों की जटिलता को भी बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उनकी कथाएँ सजीव पात्रों और जीवन्त यथार्थ से समाज के उन छोरों को पाठकों के सामने रखती हैं, जिन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। इस अध्याय में तीन प्रतिनिधि रचनाओंकृ'दिनचर्या', 'जमीन', और 'पानी के प्राचीर'कृका विश्लेषण प्रस्तुत है।

रामदरश मिश्र की प्रसिद्ध कहानी 'दिनचर्या' ग्रामीण भारत के निम्न वर्गीय परिवारों के संघर्ष और जीवन की कठोर सच्चाई को उजागर करती है। यह कहानी केवल एक गरीब परिवार की रोज़ की दिनचर्या नहीं दिखाती, बल्कि पूरे सामाजिक ढांचे के उस हिस्से को सामने लाती है, जो वर्षों से शोषण का शिकार रहा है। पात्रों के माध्यम से लेखक उस मानसिकता को उघाड़ते हैं, जिसमें एक वर्ग अपने ही जैसे मनुष्यों को दोयम दर्जे का मानता है। कहानी में एक गरीब परिवार के श्रमिक जीवन को दिखाया गया है, जिसमें रोटी, कपड़ा, और ज़मीन जैसे मौलिक अधिकार एक संघर्ष की तरह प्रतीत होते हैं। कहानी का नायक दिन–भर खेत में मजदूरी करता है, और शाम को थका–हारा लौटता हैकृयह दिनचर्या न केवल आर्थिक थकावट का चित्रण करती है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की असंवेदनशीलता को भी दर्शाती है। साहित्यिक दृष्टि से, 'दिनचर्या' में भाषा अत्यंत सहज और ग्राम्य है, जिसमें लोकशब्दों और मुहावरों का प्रयोग जीवन्तता लाता है। संवाद पात्रों की स्थिति और उनकी संवेदनाओं को स्पष्ट करते हैं।

'जमीन' कहानी में रामदरश मिश्र जातिगत भेदभाव और ज़मीन के स्वामित्व से जुड़े सत्ता संघर्ष को सामाजिक विमर्श के केन्द्र में लाते हैं। यह कहानी भारतीय ग्रामीण समाज की उस त्रासदी को दर्शाती है जिसमें भूमिकृसिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा, अधिकार और अस्मिता का प्रतीक बन जाती है। कहानी में एक दलित परिवार को उसकी पुश्तैनी जमीन से बेदखल कर दिया जाता है। उच्च जाति के लोग कानून और प्रशासन की मिलीभगत से उन्हें बाहर

कर देते हैं। यह भूमि केवल कृषि का साधन नहीं, बल्कि उस समुदाय की सामाजिक आत्मा है, जिसे छीन लिया जाता है। यह कथा जातीय असमानता, भूमि हड़पने की साजिश, और ग्रामीण सत्ता ढांचे में फैले भ्रष्टाचार का दस्तावेज़ बन जाती है। लेखक ने जातिगत जटिलताओं को केवल परिभाषित ही नहीं किया, बल्कि उनके विरुद्ध प्रतिरोध और सामाजिक चेतना का भी बीज बोया है। उदाहरण के लिए: "गरीब के लिए जमीन नहीं होती, केवल भूख होती है३ अमीरों के लिए जमीन ताकत है३ और ताकत हमेशा जुल्म करती है।" यह कथन रचना की मूल संवेदना को व्यक्त करता है।

रामदरश मिश्र का प्रसिद्ध उपन्यास 'पानी के प्राचीर' भारतीय ग्रामीण समाज की एक संश्लिष्ट, गहरी, और बहुपरतीय कथा है। इसका प्रकाशन 1961 में हुआ था और इसे हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसमें लेखक ने गोरखपुर अंचल के पाण्डेपुरवा गाँव को केन्द्र में रखकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक हलचलों को साहित्यिक कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में पानी एक प्रतीक के रूप में उभरता हैकृजीवन, अभाव और संघर्ष का। लेखक ने दिखाया है कि कैसे बाढ़ जैसे प्राकृतिक संकट के समय भी ज़मींदार वर्ग अपनी सत्ता के विस्तार में संलग्न रहता है, जबकि गरीब जनता जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रहती है।

जैसे मिश्र जी स्वयं लिखते हैं:
"पानी के पात्रों में भी गाँव के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ की संश्लिष्ट गाथा प्रस्तुत की गई है।" (मिश्रा, रामदरश, पृष्ठ 89)

इस उपन्यास में गाँव का सत्ता संघर्ष, राजनीतिक जोड़–तोड़, सामाजिक विषमता और साथ ही आशा और मूल्यों की टूटन, सब कुछ एक साथ चित्रित होता है। पात्र नायक के रूप में न तो पूर्णतः आदर्शवादी हैं और न ही पराजयवादीकृबल्कि वे संघर्षशील हैं, जिनके माध्यम से लेखक ने ग्रामीण चेतना को साहित्यिक सच्चाई में बदल दिया है। इन तीनों रचनाओंकृ 'दिनचर्या', 'जमीन', और 'पानी के प्राचीर'कृमें रामदरश मिश्र ने ग्रामीण यथार्थ की विविध परतों को उकेरा है। उन्होंने शोषण, जातीय भेद, सामाजिक अन्याय, और सत्ता संघर्ष को केवल दर्शाया ही नहीं, बल्कि उसमें छिपी मानवीय संवेदनाओं, सहिष्णुता, और मूल्य–बोध को पुनर्परिभाषित किया है। इन कहानियों के माध्यम से वे सिर्फ एक कथाकार नहीं, एक सामाजिक इतिहासकार की भूमिका निभाते हैं, जो शब्दों से ग्रामीण भारत का दास्तान रचते हैं।

समकालीनता और साहित्यिक योगदान

अन्वेषण विषयः "रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्रामीण यथार्थ और सामाजिक मूल्यों की पुनर्परिभाषा"
रामदरश मिश्र का साहित्य भारतीय ग्रामीण समाज की चेतना, संघर्ष, और बदलते मूल्यों का जीवंत दस्तावेज़ है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में जहाँ प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाया, वहीं समकालीन यथार्थ को आत्मसात करते हुए नए मूल्यों और सामाजिक बोध को भी प्रस्तुत किया। उनकी साहित्यिक यात्रा ने न केवल हिंदी कथा साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि नवगीत, ललित निबंध और संस्मरण विधाओं में भी नई दृष्टि दी। इस अध्याय में उनके समकालीन साहित्यिक योगदान को तीन प्रमुख उपविषयों में प्रस्तुत किया गया है।

रामदरश मिश्र का कथा–संसार प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परंपरा का तार्किक विस्तार है। प्रेमचंद ने जिस तरह से ग्रामीण जीवन की विषमताओं, वर्गीय संघर्षों, और मानवता के प्रश्नों को साहित्यिक संवेदना दी, उसी मार्ग पर चलते हुए मिश्र जी ने आज़ादी के बाद के गाँवों की कहानी कहीकृजो अब केवल मिट्टी, हल, और हलवाहा तक सीमित नहीं थे, बल्कि राजनीतिक चेतना, जातीय द्वंद्व, और बदलते मूल्यों से भी जूझते थे। प्रेमचंद की तरह, मिश्र जी के पात्र भी अभावग्रस्त हैं, लेकिन वे केवल सहने वाले नहीं हैंकृउनमें प्रतिरोध, आत्मबल, और चेतना का स्वर है। 'दिनचर्या', 'जमीन' जैसी कहानियाँ इस परंपरा का विस्तार करती हैं, जिसमें नायक अंततः अपनी आवाज़ पाता है। "रामदरश मिश्र हिंदी साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। जिन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, और निबंध सहित विभिन्न विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।" (मिश्रा, रामदरश, पृ. 89.)

आधुनिक हिंदी साहित्य में मिश्र जी की भूमिका

रामदरश मिश्र ने हिंदी साहित्य के विविध विधाओं में रचनात्मक योगदान देकर एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। उनका साहित्य एक ऐसे रचनाकार की गवाही देता है, जिसने गाँव की मिट्टी से उठकर शहर की जटिलताओं तक की यात्रा की और दोनों संसारों के अंतर्विरोधों को सजीव रूप से रेखांकित किया। उनकी कविताएँ सादगी और संवेदना का संगम हैं। 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ' जैसे संग्रहों में कवि की दृष्टि में सामाजिक चेतना, मानवीय करूणा और प्रकृति की सौंदर्यता का संगम देखा जा सकता है। नवगीत के क्षेत्र में उन्होंने गाँव के जीवन, लोकगीतों और श्रमिक संवेदना को वाणी दी। मिश्र जी के ललित निबंध हिंदी गद्य साहित्य को गहराई देते हैं। उन्होंने सामाजिक, साहित्यिक, और सांस्कृतिक मुद्दों पर सहज, व्यंग्यात्मक और गूढ़ विचार प्रस्तुत किए। उनके संस्मरणों में आत्मकथ्य के साथ–साथ समकालीन साहित्यिक समाज का भी प्रतिबिंब दिखाई देता है। उनके उपन्यासों जैसे 'जल टूटता हुआ', 'सूखता हुआ तालाब', और 'अपने लोग' में ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच की खाई, मनुष्यता के संकट और सत्ता की साज़िशों को बड़ी गंभीरता से प्रस्तुत किया गया है। उनके गद्य में गद्यात्मकता के साथ काव्यात्मक लय भी है, जो उनकी शैली को विशिष्ट बनाता है।

रामदरश मिश्र का साहित्य यथार्थवाद और मूल्य–नवोन्मेष का दुर्लभ समन्वय प्रस्तुत करता है। वे केवल यथार्थ के क्रूर चित्रकार नहीं हैं, बल्कि उस यथार्थ के भीतर छिपे मानवीय मूल्यों, संभावनाओं, और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को भी चित्रित करते हैं। उनकी रचनाओं में करुणा, सहिष्णुता, आत्मबल, और सामूहिक चेतना जैसे मूल्य आधुनिक संदर्भ में नए अर्थ ग्रहण करते हैं। 'पानी के प्राचीर' उपन्यास केवल बाढ़ और जल त्रासदी की कथा नहीं है, वह सत्ता के केंद्रीकरण, ग्रामीण नेतृत्व, और न्याय की मांग की भी कथा है। उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के संघर्ष को केवल विरोध में नहीं देखा, बल्कि उनमें संवाद की संभावनाओं को भी पहचाना। यह विशेषता उन्हें आधुनिक यथार्थवादी साहित्यकारों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करती है। रामदरश मिश्र का साहित्य प्रेमचंदीय परंपरा का विस्तार है, जिसने समकालीन हिंदी साहित्य को संवेदनात्मक गहराई, यथार्थपरक दृष्टि, और मूल्य–चिंतन की स्पष्टता दी है। उन्होंने गाँव की मिट्टी में बसते भारत की नब्ज को अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से इस तरह पकड़ा कि वह केवल साहित्यिक दस्तावेज़ नहीं, सामाजिक इतिहास बन गया। उनकी साहित्यिक भूमिका बहुआयामी हैकृवे कवि, कथाकार, आलोचक,

और चिंतक हैं। आज जब हिंदी साहित्य में ग्रामीण समाज के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता बढ़ती जा रही है, रामदरश मिश्र का साहित्य एक ऐसा मार्गदर्शक है जो मानवीय संवेदना, सामाजिक न्याय और रचनात्मक यथार्थ के सशक्त समन्वय से भविष्य की दिशा तय करता है।

निष्कर्ष

रामदरश मिश्र का कथा—साहित्य स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन की उस संवेदनात्मक चेतना का प्रतिनिधि है, जिसमें गाँव की मिट्टी, वहाँ के लोग, उनके संघर्ष, और बदलते सामाजिक मूल्यों की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। उन्होंने न केवल ग्रामीण यथार्थ का यथासंभव सजीव चित्रण किया है, बल्कि उसमें व्याप्त सामाजिक विसंगतियों, जातिगत विभाजनों, और राजनीतिक विडंबनाओं को भी उजागर किया है। उनके साहित्य में जो सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उभरकर सामने आता है, वह है सामाजिक मूल्यों की पुनर्परिभाषा—ऐसे मूल्य जो केवल परंपरा पर आधारित न होकर अनुभव और आधुनिकता से उपजे हैं। रामदरश मिश्र की कहानियाँ और उपन्यासकृजैसे 'जल टूटता हुआ', 'पानी के प्राचीर', 'दिनचर्या', 'जमीन', 'अपने लोग'कृसिर्फ कथा नहीं हैं, बल्कि ग्राम्य भारत की सामूहिक स्मृति और संघर्षों की जीवित अभिव्यक्तियाँ हैं। उन्होंने ऐसे पात्रों की रचना की जो पीड़ित, अभावग्रस्त और शोषित तो हैं, किंतु उनमें आत्मबल, चेतना और सामाजिक सरोकार की भावना भी है। उनके लेखन में प्रेमचंदीय परंपरा का विस्तार है, लेकिन यह परंपरा स्थिर नहीं हैकृबल्कि इसमें नवीनता, समकालीनता और भाषा में आंचलिकता का रंग भी है। उन्होंने नारी अस्मिता, दलित चेतना, गरीबी, भुखमरी, प्राकृतिक आपदाएँ और सत्ता—शोषण जैसे विषयों को बहुत ही सहजता से उकेरा है। उनकी भाषा शैली स्वाभाविक, भावप्रवण और लोकजीवन की झाँकी प्रस्तुत करती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में लोकभाषा, मुहावरों, प्रतीकों और सांस्कृतिक बिम्बों का सजीव प्रयोग किया, जिससे उनके पात्र और परिस्थितियाँ अत्यंत यथार्थवादी प्रतीत होते हैं। रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन की संवेदनाएँ, सामाजिक यथार्थ, संघर्ष और आशा का सम्मिलित रूप है। उन्होंने भारतीय ग्राम्य जीवन को साहित्य की मुख्य धारा में स्थान दिलाया। उनकी रचनाओं में यथार्थ की कसक के साथ—साथ एक सांत्वना भी है कि यह जीवन संघर्षशील होने पर भी मूल्यवान है, और यही जीवन मानवीय मूल्यों की पुनर्सरचना की प्रेरणा बनता है। कथा साहित्य ग्राम्य यथार्थ का दस्तावेज है, जिसमें व्यक्ति, समाज और व्यवस्था के जटिल अंतर्संबंधों को दर्शाया गया है। उन्होंने पारंपरिक मूल्यों को नकारा नहीं, बल्कि उन्हें आधुनिक जीवन के अनुभवों से जोड़कर पुनर्परिभाषित किया है। भाषा की दृष्टि से उनकी रचनाएँ सरल, आत्मीय, आंचलिक और संवादपरक हैं, जो ग्रामीण बोली और संस्कृ ति को सजीव करती हैं। उनके पात्र अपने यथार्थ से भागते नहीं, बल्कि उसका सामना करते हैं, और उनके माध्यम से सामाजिक चेतना का स्वर विकसित होता है।आज के संदर्भ में भी रामदरश मिश्र का साहित्य अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि वह उन समाजिक मुद्दों को संबोधित करता है जो आज भी भारत के ग्रामीण परिदृश्य में विद्यमान हैं। इस प्रकार रामदरश मिश्र के कथा साहित्य को हिंदी साहित्य के सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखा जा सकता है।

संदर्भ

ठाकरे, डॉ. गोकुलदास सोनू। "रामदर्श मिश्र के उपन्यासों में बाढ़ एक आपदा के रूप में।" जर्नल ऑफ ईस्ट—वेस्ट थॉट (जेईटी), खंड 15, अंक 1, 2025, पृष्ठ 773।

अम्बिली, टी. "श्री रामदर्श मिश्र की कहानियों में पारिस्थितिक जागरूकता।" अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, खंड 3, अंक 3, 2015, पृष्ठ 2।
"रामदर्श मिश्र का उपन्यास।" जर्नल सोर्स संकलन, 2024, पृ. 1–6.
पटेल, नीलेश के. "रामदर्श मिश्र के स्टाम्प्ड उपन्यासों में ग्रामीण चित्रण।" रिसर्च गुरु ऑनलाइन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स, खंड 12, अंक 3, दिसंबर 2018, पृष्ठ 1142
सिंह, दिनेश प्रसाद. कहानीः नई कहानी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 2
पटेल, नीलेश. "रामदर्श मिश्र के स्टाम्प्ड उपन्यासों में ग्रामीण चित्रण।" रिसर्च गुरु ऑनलाइन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स, खंड 12, अंक 3, दिसंबर 2018, पृष्ठ 1142.
मिश्रा, रामदरश। पानी के पात्र, वाणी प्रकाशन, 1994. पृष्ठ 89